मॉड्यूल-5: चित्रों के अन्य माध्यम

9. कपड़े पर चित्रकारी
10. मिट्टी पर चित्रकारी
11. लकड़ी पर चित्रकारी
12. कठपुतली बनाना

9

कपड़े पर चित्रकारी

अभी तक हमने कई तरह की लोककलाओं के विषय में जाना। आइये इस पाठ में हम कपड़े पर चित्रकारी कैसे होती है, इस कला की जानकारी प्राप्त करते हैं।

कपड़ा प्राचीन काल से ही चित्रकला के माध्यम के रूप में प्रयुक्त होता आया है। कपड़े की खोज के साथ-साथ उस पर चित्रों के अंकन की शुरुआत हुई। सबसे पहले तो मानव ने कपड़े को रंगना सीखा होगा और फिर उस पर रेखाओं या बुंदकियों से सज्जा करना जाना होगा।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने एवं अभ्यास करने के बाद आप :

- कपड़े पर चित्रण के इतिहास की व्याख्या कर सकेंगे;
- कपड़े पर चित्र बनाने की विधि का वर्णन कर सकेंगे;
- विभिन्न प्रदेशों में प्रचलित कपड़े की चित्रकारी की पहचान कर सकेंगे;
- पटचित्रों या कपड़े पर चित्र बना सकेंगे;
- कपड़े पर चित्र के लिए उपयोग किए जाने वाले रंगों की पहचान कर सकेंगे।

9.1 सामान्य परिचय

कपड़े पर जो चित्र बनाए जाते हैं, उनको सामान्यतया 'पटचित्र' कहा जाता है और इन चित्रों को बनाने की विधि 'पटचित्रण' कहलाती है। 'पट' शब्द संस्कृत का है, जिसका सामान्य अर्थ कपड़ा सफेद रंग और गोंद से बनी पट्टी होता है। आधुनिक कैनवास भी इसी का नाम है।

राजस्थान में लोक महापुरुष देवनारायण और लोकदेवता पाबूजी के जीवन चरित्र पर फड़ों का निर्माण हुआ। इनके अलावा रामलला की फड़ में रामायण के प्रसंगों और कृष्णलला की फड़ में श्रीकृष्ण के जीवन पर आधारित प्रसंगों का चित्रण होने लगा। राजस्थान में भीलवाड़ा और इसी

जिले के शाहपुरा में वर्तमान में फड़ चित्रण का कार्य होता है। छीपा जोशी परिवार इस कार्य को करते हैं।

हर्षवर्धन के शासनकाल में रचित 'हर्षचरित' और आठवीं-नवीं सदी में लिखित 'कुवलयमाला कहा' और 'नीति वाक्यामृत' से पता चलता है कि साधु प्रवृत्ति के लोग अपने पास ऐसे पटचित्रों को रखते थे जिन पर स्वर्ग-नरक के सुख दुखों का चित्रण होता था। यम की यातनाओं वाला पट सुलोक पट होता था। भिक्षुक लोग इन चित्रपटों को लोगों को दिखाते थे और अपने जीवन में अच्छे आचरण करने पर जोर देते थे। ऐसे चित्रों को कुंडलित चित्रपट कहा जाता था।

पिछवाई से आशय है मंदिरों में मुख्य प्रतिमा के पीछे टांगा जाने वाला चित्रित परदा। देव पूजा के अर्थ में जो चित्रित पट प्रतिमा के पीछे लगाया जाता है, वह पिछवाई कहलाता है। वातावरण को उक्त देवता के जीवनकाल से जोड़ने के लिए उक्त परदे पर उस काल के विभिन्न प्रसंगों कहानियों, परिदृश्य, प्रकृति आदि को चित्रित किया जाता है। एक प्रकार से पिछवाई उस काल के स्वरूप को देव दरबार में बनाने का प्रयास है।

इस पाठ में कपड़े पर चित्रांकन की परंपरा और उसकी विधाओं का परिचय दिया जा रहा है। मुख्य रूप से श्रीकृष्ण की उपासना पर आधारित राजस्थान की पिछवाई कला, लोकदेवता देवनारायण और पाबूजी के जीवन चरित्र पर आधारित फड़ कला एवं आंध्र प्रदेश की पारंपरिक कलमकारी लोकचित्र शैली पर प्रकाश डाला जा रहा है।

9.2 कपड़े पर चित्रकारी के पारम्परिक मोटिफ या अभिप्राय

आइये अब हम कपड़े पर की जाने वाली चित्रकला के पारम्परिक अभिप्रायों के विषय में जानें।

1. **लोकमहापुरुष :** देवनारायण और लोकदेवता पाबूजी का जीवन चरित्र, श्रीकृष्ण के जीवन पर आधारित प्रसंग आदि।
2. **श्रीकृष्ण नृत्य करते हुए :** महारास पिछवाई को दिखाने के लिए श्रीनाथजी को नृत्य में लीन दर्शाया जाता है।
3. **वाद्य यंत्र :** बांसुरी, शंख आदि।
4. **कदम्ब :** कदली (केला) के वृक्ष
5. गाय, कमल, मोर, मछली, कुल्हाड़ी बिच्छू आदि।
6. **दरबार का दृश्य :** पिछवाई में मुख्य प्रतिमा के पीछे टांगा जाने वाला परदा होता है। प्रतिमा के पीछे लगाया जाता है, इसलिए देवता के जीवनकाल से जोड़ने के लिए कुछ दृश्य बनाये जाते हैं। यह दृश्य प्रकृति का या दरबार का हो सकता है, जो उस काल की कहानियों को दर्शाता है।
7. **ज्यामितीय आकृतियां :** विभिन्न प्रकार की ज्यामितीय आकृतियों का प्रयोग होता है।

बांसुरी

शंख

ज्यामितीय आकृतियां

कमल

बर फूल के वृक्ष

कदली वृक्ष

मोर

कुल्हाड़ी

बिच्छू

मछली

पाबूजी

चित्र 9.1: पारम्परिक मोटिफ

9.3 कपड़े पर चित्रकारी हेतु आवश्यक सामग्री

- ड्राइंग बोर्ड
- ड्राइंग पिन
- पेंसिल
- रबर
- स्केल
- मारकीन कपड़ा
- 1, 3, 7 नम्बर के गोल ब्रुश
- पोस्टर रंग
- लेही या कलफ बनाने हेतु आटा, मैदा अथवा चावल का मांड़
- प्लास्टिक का मग
- रंग घोलने की प्लेट

कपड़े पर चित्रण हेतु सतह अथवा चित्र फलक तैयार करना

- कोरे मारकीन के कपड़े से एक मीटर कपड़ा काट लें।
- अब 100 ग्राम मैदा अथवा आटे को छान कर उसे पानी में घोलकर उसे आग पर कुछ देर उबालें, इस प्रकार लेही तैयार हो जाएगी।
- इस लेही को एक छोटी बाल्टी में एक लीटर पानी में घोल कर उसमें मारकीन का कपड़ा कुछ देर भींगने दें।
- जब कपड़े पर लेही का घोल पूरी तरह चढ़ जाए तब उसे पानी से निकाल कर बिना निचोड़े धूप में अच्छी तरह सुखा लें।
- कपड़े को सूखने के बाद समतल भूमि पर बिछाकर सीधा सपाट कर लें।
- अब इस कपड़े की सतह को कांच के गोल पेपरवेट या पत्थर के चिकने बट्टे से अच्छी तरह घिसाई करें जिससे वह समतल एवं चिकना हो जाए।
- अब चित्रकारी हेतु कपड़े की सतह तैयार है।

9.4 कपड़े पर चित्रण की पारम्परिक विधि

आपने कपड़े पर होने वाले चित्रण के पारम्परिक अभिप्रायों के बारे में जाना है। अब आप कपड़े पर चित्रण की पारम्परिक विधि सीखेंगे।

फड़ निर्माण के लिए जिस कपड़े का उपयोग किया जाता है, वह थोड़ा मोटा और दरदरा होता है। ऐसे पांच से लेकर तीस फीट तक लंबे कपड़े पर चित्रकार लोकगाथा को चित्रित करता है। फड़ को तैयार करने की विधि निम्न प्रकार है–

जिस कपड़े को फड़ के लिए काम में लिया जाना हो, उस पर चावल के मांड का कलफ लगा दिया जाता है और उसे घोटे द्वारा खूब घोटा जाता है। इससे कपड़ा कड़क हो जाता है और उस

पर रंग फैल जाने की आशंका नहीं रहती है। कलफ सूखने पर चित्रों को चांका जाता है। रेखांकन को ही चांकना कहा जाता है। प्राय: कच्चे पीले रंग से चांकना होता है।

इसके बाद रंग भरने का कार्य किया जाता है। चित्रों के मुंह और शरीर में केसरिया रंग भरा जाता है। अन्य आवश्यकता के अनुसार क्रमश: पीला, हरा, कत्थई, हींगुल और नीला रंग भरकर पूरी फड़ चितेरी जाती है। फड़ कलाकारों द्वारा मूल, चटख रंगों का ही उपयोग किया जाता है। फड़ चितेरे रंगों में गोंद, सफेद मसूली आदि को मिलाकर प्रयोग करते हैं।

मुलायम बालों से तैयार कूंची से रंगों को भरा जाता है। कूंची को गाय, भैंस, बैल, बकरी और श्वान के बालों से तैयार किया जाता है। रंग भरने के बाद उनको चिकने पाषाण से 'घोटा' जाता है। यह विधि 'घुटाई' कही जाती है। फड़ में रंग पर भी घुटाई होती है। इस घुटाई से चित्रों में भरे गए रंगों में चमक आ जाती है, चित्र चमकते हैं।

देवनारायण की फड़ : स्वरूप और प्रस्तुति

देवनारायण राजस्थान के प्रमुख लोकदेवता हैं जो गुर्जरों के आराध्य हैं। इस फड़ में देवनारायण द्वारा अपने पितृपुरुषों के स्थान पर प्रतिशोध लेने के लिए की जाने वाली लड़ाई का प्रसंग विस्तार से आता है और इसी आधाार पर उनके चरित्र को उभारा गया है। इस फड़ में मालेसर की डूंगरी पर देवनारायण का जन्म होना, मां साडू द्वारा उनको लेकर हीरा दासी के साथ मालवा जाना, मार्ग में शेरनी का दुग्धपान करना, नाग की रस्सी बनाकर पालना झुलाने, मालवा में ही उनके बचपन में चमत्कार दिखाने, मेवाड़ लौटकर खोखा पीर का वध करने, सोनियाणा का तालाब भरने, मांडल के अधूरे निर्माण कार्य पूरे करवाने और राणाजी से लड़ाई करने तक का जीवन वृतांत चित्रित होता है।

महारास (नृत्योसव) : पिछवाई

रास की पूर्णिमा पर धारण करवाई जाने वाली पिछवाई महारास की पिछवाई कहलाती है। इस प्रकार की पिछवाई में श्रीनाथ जी को नृत्य में लीन दर्शाया जाता है और वे प्रत्येक चाहने वाले के साथ नृत्य करते हुए यह दिखा रहे हैं कि वे सबके लिए हैं। इसमें श्रीनाथ जी को बीच में खड़े व बांसुरी बजाते हुए दर्शाया गया है। दो-दो गोपियों को दोनों ओर खड़े दिखाया जाता है। इनको चारों ओर गोपियों के साथ नृत्य करते हुए दिखाया गया है। इसमें नीचे वाद्य यंत्र बजाती गोपियों को दिखाया गया है। सबसे नीचे पंक्ति में गायों को दर्शाया जाता है। ऊपर कदली, कदम्ब आदि के वृक्ष दिखाए गये हैं। ऊपर से देवी-देवताओं को रास का आनन्द लेते दिखाया है। आसमान स्वच्छ और तारों से परिपूर्ण और तीन ओर श्रीनाथ जी के 25 दर्शन का अंकन किया जाता है। महारास की द्वितीय पिछवाई बहुत बड़ी होती है। एक ही पिछवाई में श्री कृष्ण की विभिन्न लीलाओं को दिखाती है। ऊपर तारा आच्छादित रात में देवताओं का विचरण है। बीच में रास, बांसुरी वादन से मुग्ध गोपियाँ, छेड़छाड़ और जल विहार जैसे दृश्य अंकित किये गये हैं। यह रास पंचाध्यायी प्रसंग का प्रतिनिधित्व करती है।

कलमकारी की विधि

कलमकारी आंध्रप्रदेश की चित्र शैली है। इसके केंद्र में दो प्रकार से चित्रांकन होता है। मछलीपट्टनम की कलमकारी में लकड़ी के छापों और कूंची का उपयोग किया जाता है। श्रीकालाहस्ती की कलमकारी में कलम और कूंची का उपयोग होता है। वनस्पति रंग दोनों ही शैलियों में प्रयुक्त होते है। मछलीपट्टनम परदे, बेडशीट्स, देवमंदिर केनोपी, आसन पिलो कवर और टेबल क्लॉथ के लिए प्रसिद्ध है लेकिन श्रीकालाहस्ति की कलमकारी पौराणिक आख्यानों के चित्रण के लिए मशहूर है।

कलमकारी के लिए सूती कपड़ा काम में लिया जाता है और उसे पहले तैयार किया जाता है। कलमकारी में लाल, काला, नीला, पीला, और हरा ये पांच रंग प्रयुक्त होते हैं। कई चित्र लाल और काले रंग से ही बनाए जाते हैं। इसमें जब पांचों रंगों का प्रयोग होता है तो चित्र सजीव हो उठते हैं। वैसे रंगों का प्रयोग कथा के प्रसंगों के अनुकूल ही होता है। परंपरानुसार गंभीर प्रसंगों को लाल रंग से ही बनाया जाता है।

कपड़ा तैयार हो जाने के बाद उस पर स्केच किया जाता है। इसके लिए इमली की पतली-पतली काढ़ियों को जलाकर चारकोल तैयार किया जाता है। इसे 'चिन्त बोग्यु' कहा जाता है। इसी से स्केच किया जाता है। इस प्रकार तैयार किए गए कपड़े पर जो चित्र खींचना हो, उसका स्वरूप बनाया जाता है।

इस प्रकार कलमकारी में रंग निर्माण, स्केच, रंग भरण, धोने, सूखाने, उबालने की बहुत जटिल प्रक्रिया है जिसमें कई दिन लग जाते हैं। इसी कारण कलमकारी के कलाकार बहुत धैर्य रखते हैं। यह रेखांकन की कला पर आधारित है, इसलिए इस कला में रेखाओं का ही बड़ा महत्व है।

पछिवाई निर्माण की विधि

पिछवाई के लिए प्रारंभ में मोटा कपड़ा काम मे आता था किंतु बाद में पतले कपड़े का प्रयोग किया जाने लगा। इस कपड़े पर आंटे से तैयार लेई का कलफ लगाया जाता है। कपड़े के सूख जाने के बाद उसे समतल कर लिया जाता है, अब प्रारंभिक खाका बनाया जाता है। इसे कच्ची टिपाई कहते हैं। कच्ची टिपाई के सही बन जाने पर सिंदूर से पक्की टिपाई की जाती है। इस प्रकार चित्रांकन कि बाह्य रेखाएं बन जाती हैं।

इसके उपरांत सुनियोजित चित्रों में रेखाओं की सजीवता और सही रंगों का प्रयोग किया जाता है। पिछवाई के चित्रों, आकारों में रंगाकन हेतु प्राय: प्राकृतिक रंग उपयोग में लिए जाते हैं। कहीं-कहीं इनमें सोने, चांदी के रंगों का भी प्रयोग किया जाता है। सर्वप्रथम चित्रों में समतल रंग भरकर रेखाई की जाती है। इसके बाद इसमें छाया और प्रकाश का भाव दिखाया जाता हैं। इससे प्रत्येक आकृति उभर जाती है।

नाथद्वार चित्रशैली में मूलत: छह रंगों का प्रयोग होता है। ये हैं लाल, पीला, सफेद, नीला, काला और हरा। इनमें काला रंग काजल से तैयार किया जाता है अन्य सभी रंग खनिजों से तैयार किए जाते हैं किंतु धीरे-धीरे बाजार में इनकी उपलब्धता हो गई।

श्रीनाथजी के मंदिर की पिछवाई सामान्यतया 11 फीट लंबी, 7' 6" ऊंची अथवा चौड़ी होती है।

प्रायोगिक अभ्यास 1

इस अभ्यास में आप कुछ अभिप्रायों को चुन कर पटचित्र बनाना सीखेंगे। देव नारायण के पारम्परिक फड चित्र को ध्यान से देखें और इसके शैली, स्वरूप और रंग समायोजन का अध्ययन करें।

प्रथम चरण : सर्वप्रथम सूती कपड़े का 50 से.मी. कपड़ा लें और इस पाठ में पहले दी गई चित्रफलक तैयार करने की विधि के अनुरूप चित्रफलक तैयार करें।

चित्र 9.2

द्वितीय चरण : अब इस चित्र में से उन अभिप्रायों एवं चरित्रों का चयन करें, जिन्हें आप अपने चित्र में चित्रित करना चाहते हैं। चुने हुए अभिप्रायों एवं चरित्रों को आप किस प्रकार संयोजित करना चाहते हैं, उसकी कल्पना करें एवं मन में एक संयोजन निश्चित करें। जैसे नीचे दिए गए चित्र में दिखाया गया है। अब स्केल की सहायता से चित्र का बार्डर अथवा हाशिया बना लें। अब पेंसिल की सहायता से चित्र में बनाई जाने वाली आकृतियों का स्थाान निश्चित करते हुए उनका हल्का रेखाचित्र बनाएं। अब प्रत्येका चित्रित आकृति का स्पष्ट आलेखन करें।

चित्र 9.3

तृतीय चरण : इसके उपरान्त चित्रित आकृतियों में तीन नम्बर के ब्रुश की सहायता से रंग भरना आरंभ करें। रंग उसी योजना के अनुसार भरें जैसे कि ऊपर देवनारायण फड़ के मूल चित्र में देख रहे हैं। पहले चित्रित आकृतियों के शरीर में हल्के सपाट रंग भरें तदुपरान्त गहरे रंग भरें।

चित्र 9.4

चतुर्थ चरण : अन्त में एक नम्बर ब्रश की सहायता से काले रंग से प्रत्येक आकृति की बाह्यरेखा चित्रित करें। चित्र में यदि कोई दाग-धब्बे हों तो उन्हें रबड़ से मिटा दें।

चित्र 9.5

- अब आपका चित्र तैयार है।

प्रायोगिक अभ्यास 2

अब आप कपड़े पर महारास पिछवाई चित्र तैयार करेंगे।

प्रथम चरण : सबसे पहले सूती मारकीन कपड़े का 35 से.मी. × 50 से. मी. का एक टुकड़ा लें एवं इस पाठ में पहले दी गई चित्रफलक तैयार करने की विधि से अपने लिए एक चित्रफलक तैयार करें।

महारास पिछवाई चित्र के एक भाग की अनुकृति तैयार करनी है, सम्पूर्ण चित्र की नहीं। अत: श्रीनाथजी के चित्र के सूक्ष्म विवरण भी अपने मन में बैठा लें। अब स्केल की सहायता से चित्र का बार्डर अथवा हाशिये बनाएँ एवं हल्के हाथ से पेंसिल चलाते हुए श्रीनाथजी की आकृति का स्केच बना लें।

चित्र 9.6

द्वितीय चरण : तदुपरान्त हाशिए के डिजाइन एवं श्रीनाथजी की आकृति को स्पष्ट रूप से रेखांकित करें, प्रत्येक विवरण को पूर्ण सजीवता से चित्रित करें। रबर से अतिरिक्त रेखाएं मिटा दें एवं पृष्ठभूमि से रंग भरना आरंभ करें। सम्पूर्ण चित्र में सपाट एवं हल्के रंग भरते हुए आगे बढ़ें।

चित्र 9.7

तृतीय चरण : अब चित्र में चेहरे, वस्त्र एवं अभूषण आदि के विवरण स्पष्ट करते हुए विभिन्न रंगों को सफाई से भरें।

चित्र 9.8

चतुर्थ चरण : तदुपरान्त एक नम्बर के ब्रुश की सहायता से मूल चित्र का अनुसरण करते हुए काले रंग से आकृतियों की बाह्यरेखाओं को चित्रित करें।

चित्र 9.9

अन्त में सबसे गहरे एवं सबसे प्रकाशवान रंग लगाए। अब पिछवाई चित्र तैयार है।

चित्र 9.10

प्रायोगिक अभ्यास 3

अब आप कपड़े पर कलमकारी चित्र के लिए एक और डिजाइन बनाएँ।

प्रथम चरण : सर्वप्रथम सूती मारकीन कपड़े का एक 35 से.मी. × 50 से.मी. का टुकड़ा काट लें। अब इस पाठ में पहले दी गई चित्र फलक तैयार करने की पद्धति का अनुसरण करके कपड़े के चित्रफलक को तैयार कर लें।

इसके बाद कलमकारी चित्र का सूक्ष्म अध्ययन करें। चित्र का प्रारूप, आकृतियों की बनावट एवं निरूपण शैली तथा रंग योजना को ध्यान से समझें। आप इस चित्र को बनाने की शैली ध्यान से समझें। पहले चित्र का बार्डर बनाएँ फिर मुख्य चरित्रों का स्थान निर्धारित कर उनका हल्का रेखांकन करें तत्पश्चात अन्य आकृतियों का निरूपण करें।

चित्र 9.11

द्वितीय चरण : अब प्रत्येक आकृति को सुस्पष्ट करें, उनके विवरण रेखांकित करें एवं अनावश्यक रेखाओं को रबर से मिटा दें।

चित्र 9.12

तृतीय चरण : कलमकारी की रंगयोजना को ध्यान में रखते हुए विभिन्न आकृतियों में रंग भरें। अब एक नम्बर के ब्रुश से काले रंग से सभी आकृतियों की बाह्यरेखा चित्रित करें। रेखांकन बहुत ही सफाई से किया जाना चाहिए।

चित्र 9.13

चतुर्थ चरण : चित्र में ध्यानपूर्वक रंग भरें।

चित्र 9.14

अब कलमकारी चित्र तैयार है।

आपने क्या सीखा

कपड़े पर चित्रकारी

विभिन्न प्रकार

फेब्रिक्स चित्र (पेंटिंग)	फड़ चित्र (पेंटिंग)	पिछवाई चित्र (पेंटिंग)	कलमकारी चित्र (पेंटिंग)
चावल का स्टार्च लगाएं	चावल का स्टार्च लगाएं	गेहूँ का लेई/कलफ लगाएं	गेहूँ का स्टार्च लगाएं
पहली रूपरेखा पीला रंग द्वारा	पत्थर द्वारा पॉलिस	प्रारम्भिक डिजाइन बनाएँ	कलम द्वारा रेखांकन (स्केच) बनाएँ
डिजाइन भरें सफेद रंग से	रूपरंखा तैयार करें फिर रंग भरें	प्राकृतिक रंग भरें	लकड़ी के ब्लॉक और ब्रश का प्रयोग करे

पाठांत प्रश्न

1. कपड़े पर चित्रकारी हेतु चित्रफलक किस प्रकार तैयार किया जाता है? प्रस्तुत कीजिए।
2. भारत में कपड़े पर चित्रकारी की कौन सी प्रमुख परम्पराएं हैं? उल्लेख कीजिए।
3. फड़ अथवा फड़ चित्र क्या होता है? स्पष्ट कीजिए।
4. पिछवाई चित्रों के विषय क्या होते हैं तथा ये क्यों बनाए जाते हैं?
5. कलमकारी चित्रों की विशेषताएं लिखिए?
6. श्रीनाथजी का एक चित्र बनाइए।
7. रामदेव की फड़ से रामदेव की आकृति का चित्रण करें।

शब्दकोश

घौंटा : चिकना गोल पत्थर

कलफ : चावल का मांड या मैदा से बनी पतली लेही जिसे कपड़े को कड़क बनाने हेतु उस पर लगाया जाता है।

श्वान : कुत्ता

पाषाण : पत्थर

पितृपुरुष : पूर्वज